

एकादशोऽध्यायः
स्त्रीणां गृहस्थधर्मवर्णनम्
स्त्रियों के गृहस्थधर्म का वर्णन

ब्रह्मोवाच

या पतिं दैवतं पश्येन्मनोवाक्कायकर्मभिः। तच्छरीरार्धजातेव सर्वदा हितमाचरेत्॥ १॥
तत्प्रियां प्रियवत्पश्येत्तद्वेष्यां द्वेष्यवत्सदा। अधर्मानर्थयुक्तेभ्योऽयुक्ता चास्य निवर्तते॥ २॥
प्रियं किमस्य किं पथ्यं साम्यं चास्य कथं भवेत्। ज्ञात्वैवं सर्वभृत्येषु न प्रमाद्येत वै द्विजाः॥ ३॥
देवतापितृकार्येषु भर्तुः स्नानाशनादिषु। सत्कारेऽभ्यागतानां च यथौचित्यं न हापयेत्॥ ४॥
वेश्मात्मा च शरीरं हि गृहिणीनां द्विधा कृतम्। संस्कर्त्तव्यं प्रयत्नेन प्रथमं पश्चिमादपि॥ ५॥

ब्रह्मदेव कहते हैं- पतिव्रता पत्नी अपने पति के प्रति आराध्यदृष्टि रखकर मनसा, वाचा, कर्मणा उसको देवता माने। उसका कल्याणसाधन सदा इस प्रकार करे मानो वह स्वयं उसी का आधा शरीर है। पति की प्रियवस्तु को उसके प्रिय व्यक्तियों को भी उसके प्रिय के समान ही माने तथा पति की अप्रिय वस्तु तथा व्यक्ति में अप्रिय भावना रखे। हे द्विजगण! वह स्त्री यह विचार रखे कि मेरे पति को क्या प्रिय है, दोनों का साम्य क्या होगा, यह समझकर कभी दास, दासीगण के साथ असावधान व्यवहार न करे। जब गृह में देव-पितृकार्य हो रहा हो, तब पति के स्नान, भोजनादि कार्य, अतिथि के स्वागत, सत्कार आदि उचित कार्य करे। गृहस्थ पत्नी का शरीर घर एवं आत्मा रूप भागद्वय में विभक्त है। इसमें से घर की स्वच्छता आत्मा से भी अधिक करे॥ १-५॥

कृत्वा वेश्म सुसंमृष्टं त्रिकालविहितार्चनम्। वृत्तकर्मोपभोगानां संस्कर्त्तव्यं यथोचितम्॥ ६॥
प्रातर्मध्यापराह्नेषु बहिर्मध्यान्तरेषु च। गृहसम्मार्जनं कृत्वा निष्कारान्न निशि क्षिपेत्॥ ७॥
गोमहिष्यादिशालानां तत्पुरीषादिमात्रकम्। व्यपनेयं तु यत्नेन सम्मार्जन्या प्रसाधनम्॥ ८॥
दासकर्मकरादीनां बाह्याभ्यन्तरचारिणाम्। पोषणादिविधिं विद्यादनुष्ठानं च कर्मसु॥ ९॥

प्रातः, मध्याह्न एवं सायंकाल में गृह की साफ-सफाई करके स्वच्छ बनाये तथा उसकी पूजा करे। सभी कार्य स्वच्छता से करे। घर की वस्तुओं की भी पर्याप्त स्वच्छता करनी चाहिये। घर के आन्तरिक, मध्य तथा बाह्य की सफाई करके प्रातः, मध्याह्न एवं अपराह्न में कूड़ा भले ही बाहर फेंके, लेकिन रात्रि में कूड़ा कदापि बाहर न फेंके। गोशाला तथा महिषशाला से उनके मूत्र तथा गोबर आदि को साफ करके वहाँ अधिक स्वच्छता रखे। घर के अन्दर वाले तथा बाहर वाले दास, दासी, भृत्यों के भोजनादि की व्यवस्था भी गृहिणी करे। सभी गृहस्थी के कार्यों पर दृष्टि रखे॥ ६-९॥

शाकमूलफलादीनां वल्लीनामौषधस्य च। सङ्ग्रहः सर्वबीजानां यथाकालं यथाबलम्॥ १०॥
ताम्रकांस्यायसादीनां काष्ठवेणुमयस्य च। मृन्मयानां च भाण्डानां विविधानां च सङ्ग्रहम्॥ ११॥
कुण्डकादिजलद्रोण्या कलशोदञ्चतालुकाः। शाकपात्राण्यनेकानि स्नेहानां गोरसस्य च॥ १२॥
मुसलं कुण्डनीयं तु यन्त्रकं चूर्णचालनी। दोहन्यो नेत्रकं मन्था मण्डन्यः शृङ्खलानि च॥ १३॥

सन्दंशः कुण्डिका शूलाः पट्टपिप्पलको दृषत्। डिविका हस्तको दर्वी भ्राष्टस्फुटलकानि च॥ १४॥

तुलाप्रस्थादिमानानि मार्जन्यः पिटाकानि च। सर्वमेतत्प्रकुर्वीत प्रयत्नेन च सर्वदा॥ १५॥

शाक-मूल, फल, लता, ओषधि तथा सभी बीजों का संग्रह स्वशक्ति के अनुसार करे। ताम्र, कांस्य, लौह, काष्ठ, बाँस, मृत्तिका के गृहोपयोगी पात्रों का भी संग्रह करे। घर में जल संचयार्थ बड़ी-बड़ी द्रोणी, कलश, बड़े पात्र से जल निकालने हेतु छोटे जलपात्र, झारी, शाक आदि रखने के पात्र का संकलन करे। मूसल, ओखली, सूप, चलनी, गोदुग्ध दोहन पात्र, तेल तथा गोरस रखने के पात्र, सिल, चक्की, मथानी, जंजीर, सड़सी, कुण्डिका, शूल, चिमटा, कलछुल, कड़ाही, बड़े करछे, तराजू, बाट, झाड़ू, पिटारी आदि गृहस्थी की उपयोगी सामग्री तथा वस्तु का संग्रह प्रयत्न करके करना चाहिये॥ १०-१५॥

हिंवादिकमथो जाजी पिपल्यो मरिचानि च। राजिका धान्यकं शुण्ठी त्रिचतुर्जातकानि च॥ १६॥

लवणं क्षारवर्गाश्च सौवीरकपरूषकौ। द्विदलामलकं चिञ्चा सर्वाश्च स्नेहजातयः॥ १७॥

शुष्ककाष्ठानि वल्लूरमरिष्टा पिष्टमाषयोः। विकाराः पयसश्चापि विविधाः कन्दजातयः॥ १८॥

नित्यनैमित्तिकानां हि कार्याणामुपयोगतः। सर्वमित्यादि सङ्ग्राहं यथावद्विभवोचितम्॥ १९॥

हींग, जीरा, पिपली, धनिया, राई, तीनों तरह की सोंठ, नमक, अन्य क्षार, काँजी, सिरका, दाल, आमलकी, इमली, सभी प्रकार के खाद्य तैल, सूखी लकड़ी, पिसी उड़द, सूखे मांस आदि, रीठा, दूध से बनने वाली सभी वस्तु, सब प्रकार के कन्द तथा अन्य उपयोगी एवं गृह में काम आने वाली सभी वस्तुओं को पहले से ही एकत्र किये रहे॥ १६-१९॥

यत्कार्याणां समुत्पत्तावुपाहर्तुं न दृश्यते। तत्प्रागेव यथायोगं सङ्गृह्णीयात्प्रयत्नतः॥ २०॥

धान्यानां घृष्टपिष्टानां क्षुण्णोपहतयोरपि। भृशं शुष्कार्द्रसिद्धानां क्षयवृद्धी निरूपयेत्॥ २१॥

॥ इति श्रीभविष्यमहापुराणे शतार्द्धसाहस्र्यां संहितायां ब्राह्मे पर्वणि

स्त्रिणां गृहस्थधर्मवर्णनं नामैकादशोऽध्यायः॥ ११॥

अपने वित्त सामर्थ्य के अनुसार ऐसी सभी सामग्री विचारपूर्वक पहले से ही एकत्र करे। कार्यारम्भ हो जाने से जिन वस्तुओं को अब मँगा सकना कठिन हो जाता है, उनको विचार करके पहले से ही एकत्र करे। अब यह निरूपण किया जा रहा है कि घिसने, पीसने, पकाने में कितनी न्यूनता होती है। कच्चे, अत्यन्त सूखे, गीले अन्नों में कितनी वृद्धि होती है॥ २०-२१॥

॥ श्रीभविष्यमहापुराण के शतार्द्ध साहस्री नामक संहिता के ब्राह्मपर्व में
स्त्रियों के गृहस्थधर्म का वर्णन नामक ग्यारहवाँ अध्याय पूर्ण हुआ॥ ११ ॥

★★★